कविता- III

अगर कहीं मैं तोता होता
तोता होता तो क्या होता ?
तोता होता।
होता तो फिर ?
होता, 'फिर' क्या ?
होता क्या ? मैं तोता होता ।
तोता तोता तोता तोता
तो तो तो तो ता ता ता ता
बोल पट्ठे सीता राम

-रघुवीर सहाय-

Poetry for both Male and Female Candidate, Four Pages may kindly send to upload in website for Skill Test.

01.06.19

HOD/ACT/97
01.06.19

Faculty Coordinator, FFTV

Please send it to IT for uploading as Acting skill test sample paper.

01/06/19

Receipt No. 180
Dated 1/6/19
Deptt. of FTV SUPVA

- Supdt/. (FFTV)

AR (IT)

Kmalik
1.6.19

Please do the needful.

3/6/19

Nodal Officer
HKCL.

कविता- I

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

-नागार्जुन-

कविता- II

सो जा मेरी नन्ही सिहरन
सो जा मेरी झिलमिल उलझन,
लाल पलंग पर सो जा!
चंदा मामा आएगा
नए खिलौने लाएगा,
तब तक तू निंदिया के जल में
छुपुर-छुपुरकर ताजा हो ले!
अंधियारे के कजरौटे से
एक डिठौना तेरे माथे!
दूध-बताशा लिए चांदनी
गुटुर-गुटुर तू पी ले, बेटी!
हवा झुनझुना बजा रही है,
लहरें स्वेटर बना रही हैं।
उठकर घुम्मू करने जाना,
बाबा की छाती सिरहाना!
सो जा मेरी झिलमिल उलझन!

-अनामिका-

01.06.19

Speech for male candidate

महिपत- मन में हिम्मत रखकर दफ्तर गया दूसरे दिन सुबह, रटता हुआ , ईश्वरभाई , एक खबर है। ईश्वरभाई , एक ताज़ा खबर लाया हूँ। ईश्वरभाई , मैंने कल यम. ये. पास किया। किलास वही,रायल। एक प्रार्थना है। इतने वर्षों में कभी नहीं की। काम में कोताही नहीं की। अब... वेतन में बढ़ोतरी ..... (थूक निगलकर) मिलेगी ? ज़्यादा नहीं... दस रुपए ,सिर्फ। बस्स। (पसीना पोंछकर) बढ़ोतरी की गरज थी। माहवारी दस रूपया सिर्फ। जी। (नर्वस है।) दस रूपए। वो भी इसलिए की मैंने यम. ये. कर लिया है।

नाटक- जाति ही पूछो साधु की
नाटककार- विजय तेन्दूळकर

ययाति - (कुछ देर तक कुछ समझ नहीं आता है ,फिर...) हाँ, देखो शर्मिष्ठा , मेरा तुम से बात करना ठीक नहीं है। .....उसके लिए समय भी नहीं है। पर एक बात कहता हूँ, तुम उसे यूं ही तंग न करो..... उसे तुमसे बहुत प्यार है... तुम्हें घर भेजने के लिए कहने पर भी वह तैयार नहीं है। तुम्हे उस प्यार का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। इससे तुम्हें भी सुख नहीं .... तुम एक महीना-भर ठीक से रहो ; बाद में तुम्हें घर भेज दूँगा।

नाटक- ययाति
नाटककार- गिरीश कारनाड

01.06.19

Speech for female candidate

बेणारे - स्कूल में पहली बेल होती और मेरे पैर स्कूल के भीतर होते। पिछले आठ बरसों में मेरी इस बात पर किसी को ऊँगली उठाने का साहस नहीं हुआ। पढ़ाने के मामले में भी। मेरा पोर्शन कभी भी पीछे नहीं रहा। कॉपियाँ ठीक वक्त पर जँचकर तैयार।

किसी को नाम रखने की गुंजाइश ही नहीं छोड़ती मैं।

नाटक- ख़ामोश: अदालत जारी है
नाटककार- विजय तेन्दूळकर

शर्मिष्ठा - कुटिलता ? मुझमें ? मेरी गलती हो तो बताओ। सुधारने का प्रयत्न करूंगी। मैं जन्म से असुर कन्या हूँ। यह क्षत्रियों का महल है , फिर तुम्हारे जैसी ब्राह्मणी। मुझसे कोई भूल हो गई हो.... हाँ, यह बात रहने दो, तुम्हारा युवराज आज ही आ रहा है न?

नाटक- ययाति
नाटककार- गिरीश कारनाड

01.06.19